वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 421
ISBN-978-93-84003-09-8

चौबीसी विधान

(लघु)

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित चौबीसी मंदिर के तृतीय प्रतिष्ठापना दिवस मगसिर शु. त्रयोदशी, 15 दिसम्बर 2013 के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती वर्ष सन् 2013-2014 (अमृत महोत्सव) के अन्तर्गत प्रकाशित)

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	मगसिर शु. त्रयोदशी, 15 दिसम्बर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

जैन परम्परा में उपयोग तीन प्रकार का माना गया है। अशुभोपयोग, शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग। इन तीनों उपयोगों में से कोई न कोई उपयोग प्रतिक्षण जीव में चला ही करता है जिसमें से अशुभोपयोग तो दुर्गति का कारण पाप रूप हैं जो कि सर्वथा हेय है। बात है उपादेयता की-शेष दोनों शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग उपादेय है। चूँकि गृहस्थ श्रावक के शुभोपयोग के अलावा शुद्धोपयोग हो नहीं सकता इसलिए शुभोपयोग ही उपादेय ठहरता है। शुद्धोपयोग वीतराग चारित्र से अविनाभावी है और वीतराग चारित्र निर्ग्रन्थ मुनियों में ही संभव है। अतः श्रावकों को प्रयत्नपूर्वक शुभोपयोग की भावना में ही प्रवर्तन करना चाहिए। पूजन–पाठ, सामायिक, दान आदि समस्त धार्मिक क्रियायें पुण्यरूप हैं और शुभोपयोग हैं इसलिए श्रावकों द्वारा शांतिविधान, सिद्धचक्र विधान आदि मण्डल विधान करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, शांतिविधान आदि अनेकों छोटे, बड़े विधानों की रचना की है। उसी श्रृंखला में यह 'चाबीसी विधान (लघु) पूज्य माता ने रचकर हमें प्रदान किया है। इसमें चौबीस तीर्थंकर की पूजा एवं उनके पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। यह विधान पूज्य माताजी ने जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में निर्मित 'चौबीसी मंदिर' के तृतीय प्रतिष्ठापना दिवस (मगसिर शु. त्रयोदशी) के शुभ अवसर पर रचकर प्रदान किया है।

श्री हंसराज जैन धर्मपत्नी श्रीमती उषा जैन प्रियदर्शिनी विहार दिल्ली के सौजन्य से जम्बूद्वीप पर चौबीसी मन्दिर का निर्माण हुआ है। इस प्रतिष्ठापना दिवस के अवसर पर श्री हंसराज जी के पूरे परिवार ने आकर इस नूतन विधान को करते हुए पुण्य लाभ प्राप्त किया। यह विधान श्री हंसराज जी एवं उनके परिवार के लिए एवं इस विधान को करने एवं कराने वालों के लिए सभी प्रकार के रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य को दूर करते हुए सुख, समृद्धि की प्राप्ति करावे, यही मंगल भावना है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे पूज्य माताजी स्वस्थ एवं दीर्घायु प्राप्त करें, यहीं जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भक्ति मार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यस्वरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान बना सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पाप पुंजों को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साधन गृहस्थ के षट्कर्म का पालन करना उसके आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमण्डल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं, इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिकादि पर्वों में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

पूजा विधानों की श्रृंखला में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह 'चौबीसी विधान (लघु)' रचकर नूतनकृति के रूप में हमें प्रदान किया है। इसमें चौबीस तीर्थंकर की एक पूजा है एवं चौबीसों तीर्थंकर के पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं और 24 तीर्थंकरों के यक्ष–यक्षिणी अर्थात् शासन देव–देवी के 48 अर्घ्य हैं। सर्वप्रथम इसमें थोस्सामि स्तव अर्थात् 24 तीर्थंकरों के स्तवनरूप मंगलाचरण से विधान का शुभारम्भ है। पुनः पूज्य माताजी ने नित्य मंगल की भावना से लिखा है–

सद्धर्मतीर्थकर्तारः पंचकल्याणस्वामिनः।
चतुर्विंशतितीर्थेशाः , नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।

इस विधान में चौबीस तीर्थंकरों के पंचकल्याणक के 120 अर्घ्य हैं जिन्हें मंडल पर चढ़ाना है और 24 तीर्थंकरों के शासन देव–देवियों के 48 अर्घ्य मण्डल के बाहर चारों ओर चढ़ाना हैं। इस विधान में 2 जयमाला हैं। पूजा के अन्त में पूज्य माताजी ने लिखा है–

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, को जजें जो भाव से।
निज आत्मा को शुद्धकर, छूटें तुरत भव दुःख से।।
संपूर्ण वांछित प्राप्त कर, अतिशायि सुख को पावते।
'सज्ज्ञानमति' कैवल्य कर, फिर पुनर्जन्म न धारते।।1।।

यह विधान लघु होते हुए भी चमत्कारिक विधान है। क्योंकि इसमें 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणक के 120 अर्घ्य हैं एवं 24 तीर्थंकरों के शासन देव-देवी के भी अर्घ्य हैं। पूज्य माताजी ने इस विधान में भावना व्यक्त की है कि जो भी भावपूर्वक 24 तीर्थंकरों की पूजा करते हैं वे अपनी आत्मा को शुद्ध करके भव दुख से छूटकर सम्पूर्ण इच्छित सुख को प्राप्त करते हैं और अनुक्रम से एक दिन केवलज्ञान को प्राप्त कर पुनः जन्म धारण नहीं करते हैं।

प्रशस्ति में पूज्य माताजी ने अपनी गुरु परम्परा का वर्णन करते हुए विधान की अक्षुण्णता की भावना करते हुए लिखा है–

महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
हस्तिनापुर में सुमेरु सह, जम्बूद्वीप स्थिर हो।।
चौबीसी मन्दिर आदिक सब, जिनप्रतिमायें जब तक।
तब तक चौबीसी विधान लघु, जग में हो मंगलप्रद।।

यह विधान की नूतनकृति आपके जीवन को मंगलमय बनावे, चौबीसों तीर्थंकर भगवान की भक्ति से आप सभी लोग अपने मनवांछित कार्य की सिद्धि करें, यही मंगल भावना है।

-प्रकाशन सौजन्य-

श्रीमती मोहिनी जैन ध.प. श्री महावीर जैन, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. ने दशलक्षण व्रत के उद्यापन के उपलक्ष्य में ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ हम संस्थान की ओर से आपकी ज्ञानदान की श्रेष्ठ भावनाओं का सम्मान करते हुए इस महत्वपूर्ण पुस्तक के प्रकाशन में सौजन्य प्रदान करने हेतु अत्यन्त आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। आगे भी संस्थान को आपका सहयोग प्राप्त होता रहे, ऐसी आशा है।

दो शब्द

-आर्यिका सुव्रतमती

श्री चौबीसों तीर्थंकर ही, भव्यों के शिवपद नेता हैं।
वे कर्म अचल के भेत्ता हैं, त्रिभुवन के ज्ञाता द्रष्टा हैं।।
मैं उनको पुनः पुनः प्रणमूँ, नित प्रति ध्याऊँ और गुण गाऊँ।
यावत् नहिं सिद्धि मिले तावत् , जिन चरणों में ही रम जाऊँ।।1।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं–इक्कीसवी शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 300 ग्रंथों का लेखन शुद्ध, प्रासुक लेखनी से आगमानुसार किया है।

पूज्य माताजी ने 24 तीर्थंकरों की भक्ति में पृथक्–पृथक् चौबीस तीर्थंकरों की हिन्दी में एवं संस्कृत में स्तुति लिखी है, जो कि 'जिनस्तोत्र संग्रह' में प्रकाशित है। इसके साथ ही 24 तीर्थंकरों की पृथक्–पृथक् पूजाएँ बनाईं है, जो कि 'जम्बूद्वीप पूजांजलि' में प्रकाशित है। 'चौबीस तीर्थंकर विधान' जिसमें चौबीस तीर्थंकरों की अलग–अलग पूजा एवं सभी के पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं छप चुका है। अब पुनः पूज्य माताजी ने चौबीसी विधान (लघु) की रचना की है। इसमें एक चौबीसी पूजा एवं 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणक के 120 अर्घ्य हैं एवं 24 तीर्थंकरों के शासन देव–देवी के भी 48 अर्घ्य है। यह विधान लघु होते हुए भी अतिशयकारी विधान है।

पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। माताजी क्वँारी कन्याओं की पथप्रदर्शिका हैं, वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित हैं, जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम से संस्कृत टीका लिखने वाली, अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद करने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्त- चक्रेश्वरी, वाग्देवी आदि अनेकों उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए एक वरदान हैं।

विधान की प्रूफरीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर कर शीघ्र ही श्रुतज्ञान, केवलज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–2 नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषय-दर्पण

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण–थोस्सामि स्तवन	1
2.	चौबीस तीर्थंकर पूजा	3
3.	24 तीर्थंकर वे पंचकल्याणक के 120 अर्घ्य	5
4.	चौबीस यक्षों के अर्घ्य	33
5.	चौबीस यक्षिणी के अर्घ्य	37
6.	जयमाला	41
7.	बड़ी जयमाला	44
8.	प्रशस्ति	48
9.	आरती	49
10.	णमोकार महामंत्र महिमा	50
11.	भजन	53
12.	भजन	54
13.	भजन	55
14.	भजन	56

मण्डल का नक्शा

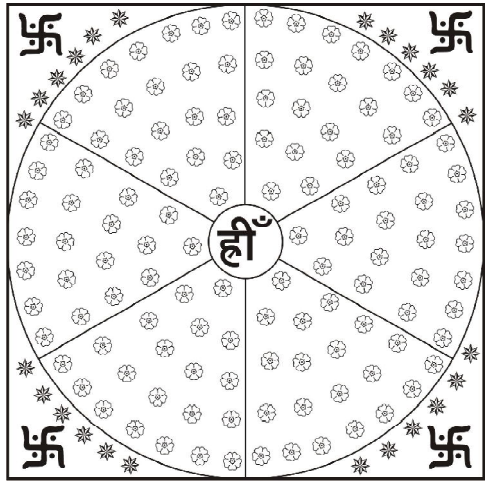

पूजा-1, कुल अर्घ्य-120, शासन देव-देवी के-48 अर्घ्य (मण्डल के बाहर चढ़ाना है), जयमाला-2

चौबीसी विधान

(लघु)

मंगलाचरण

-थोस्सामि स्तवन-

स्तवन करूँ जिनवर तीर्थंकर, केवलि अनंत जिन प्रभु का।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज, मल से रहित महात्मन् का।।1।।

लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर, श्री जिन का मैं नमन करूँ।
जिन चउवीस अर्हंत तथा, केवलि गण का गुणगान करूँ।।2।।

ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमतिनाथ का कर वंदन।
पद्मप्रभ जिन श्री सुपार्श्व प्रभु, चन्द्रप्रभ का करूँ नमन।।3।।

सुविधि नामधर पुष्पदंत, शीतल श्रेयांस जिन सदा नमूँ।
वासुपूज्य जिन विमल अनंत, धर्म प्रभु शान्तिनाथ प्रणमूँ।।4।।

जिनवर कुन्थु अरह मल्लि प्रभु, मुनिसुव्रत नमि को ध्याऊँ।
अरिष्ट नेमि प्रभु श्री पारस, वर्धमान पद शिर नाऊँ।।5।।

इस विध संस्तुत विधुत रजोमल, जरा मरण से रहित जिनेश।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मुझ पर हों प्रसन्न परमेश।।6।।

कीर्तित वंदित महित हुए ये, लोकोत्तम जिन सिद्ध महान् ।
मुझको दें आरोग्यज्ञान अरु, बोधि समाधि सदा गुणखान।।7।।

चन्द्र किरण से भी निर्मलतर, रवि से अधिक प्रभाभास्वर।
सागर सम गंभीर सिद्धगण, मुझको सिद्धी दें सुखकर।।8।।

सद्धर्मतीर्थकर्तारः पंचकल्याणस्वामिनः।
चतुर्विंशतितीर्थेशाः, नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।9।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चौबीस तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

पुरुदेव आदि चौबिस तीर्थंकर, धर्मतीर्थ करतार हुये।
इस जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के, आर्यखंड में नाथ हुये।।
इन मुक्तिवधू परमेश्वर का, हम भक्ती से आह्वान करें।
इनके चरणाम्बुज को जजते, भव भव दुःखों की हानि करें।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

हे नाथ! मेरी ज्ञानसरिता, पूर्ण भर दीजे अबे।
इस हेतु जल से आप के, पदकमल को पूजूँ अबे।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में सम्पूर्ण शीतल, सलिल धारा पूरिये।
तुम चरण युगल सरोज में, चंदन चढ़ाऊँ इसलिए।।चौबीस.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंडित सौख्य निधि, भंडार भर दीजे प्रभो।
इस हेतु अक्षत पुंज से, मैं पूजहूँ तुम पद विभो।।चौबीस.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मगुण सौगंध्य सागर, पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले, पूजहूँ तुम पद विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी करो परिपूर्ण तृप्ती, आत्म सुख पीयूष से।
भगवन्! अतः नैवेद्य से, पूजूँ चरण युग भक्ति से।।चौबीस.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में, पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं आरती रुचि से करूँ, अज्ञानतम तुरतहिं भगे।।चौबीस.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मयश सौरभ गगन में, व्याप्त कर दीजे प्रभो।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं, कटुकर्म भस्म करो विभो।।चौबीस.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मगुण संपत्ति को, अब पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ, आपके सन्निध विभो।।चौबीस.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल गुण निज के अनंते, किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ्य अर्पण करत ही, निज ''ज्ञानमति'' सुख पूर्ण हो।।चौबीस.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

तीर्थंकर चरणाब्ज में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निजगुण मणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, आत्म सौख्य विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

चौबीस तीर्थंकर के पंचकल्याणक के 120 अर्घ्य

–दोहा —

तीर्थंकर चौबीस जिन, पंचकल्याणक ईश।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, नमूँ नमूँ नत शीश।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(1)

–शंभु छंद –

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

–गीता छंद –

साकेतनगरी में पिता, जितशत्रु विजया मात के।
उर में बसे नक्षत्र रोहिणि, ज्येष्ठ कृष्ण अमावसे।।
श्री अजितनाथ विजय अनुत्तर, से उतर आये यहाँ।
प्रभु गर्भकल्याणक मनाते, इंद्र मैं पूजूँ यहाँ।।6।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां श्रीअजितनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि देवी मात की, सेवा करें अति भक्ति से।
अतिगूढ़ करतीं प्रश्न वे, उत्तर दिया माँ युक्ति से।।

सुदि माघ दशमी तिथि सुखद, अजितेश जिन जन्में यहाँ।
सौधर्म सुरपति ने सुमेरू, पर न्हवन विधिवत् किया।।7।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां श्रीअजितनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य उल्कापात से, देवर्षि सुरगण आ गये।
सुप्रभा पालकि में बिठा, वन सहेतुक में ले गये।।
सुदि माघ नवमी शाम को, नृप सहस सह दीक्षा लिया।
मनपर्ययी ज्ञानी हुए, ध्यानस्थ हो बेला किया।।8।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लानवम्यां श्रीअजितनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेत में नृप ब्रह्म खीर, अहार दे हर्षित हुए।
छद्मस्थ बारहवर्ष नंतर, अजितप्रभु केवलि हुए।।
सुदि पौष ग्यारस नखत रोहिणि, में सुरासुर आ गये।
जिन समवसृति में सिंहसेन, गणीन्द्र मुनिगण शिर नये।9।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाएकादश्यां श्रीअजितनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर पंचमी तिथि चैत्रशुक्ला, समय था पूर्वाण्ह जब।
सम्मेदगिरि पर योग को, रोका प्रभू ध्यानस्थ तब।।
रोहिणि नखत में सब अघाती, घात शिवलक्ष्मी वरी।
मैं पूजहूँ श्री अजित को, इस तिथी को भी इस घड़ी।।10।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां श्रीअजितनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

–शंभु छंद–

संभवजिन अधो ग्रैवेयक तज, नगरी श्रावस्ती में आये।
दृढ़रथ पितु मात सुषेणा के, वर गर्भ बसे जन हरषाये।।

फागुन सुदि अष्टमि तिथि उत्तम, मृगशिर नक्षत्र समय शुभ था।
इन्द्रों ने जन्मोत्सव कीया, पूजत ही पापकर्म नशता।।11।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब प्रभु ने जन्म लिया भूपर, देवों के आसन काँप उठे।
झुक गये मुकुट सब देवों के, माँ उत्तर देती युक्ती से।।
कार्तिक पूना मृगशिर नक्षत्र में, संभवप्रभु ने जन्म लिया।
मेरू पर सुरगण न्हवन किया, तिथि जन्म जजत सुख प्राप्तकिया।।12।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघों का विभ्रम देख विरक्त, हुए संभव मगसिर पूनम।
लौकांतिक सुर ने स्तुति की, सिद्धार्था पालकि सजि उस क्षण।।
इक सहस नृपति सह दीक्षा ली, उद्यान सहेतुक में प्रभु ने।
सुरपति ने उत्सव किया तभी, मैं नमूँ नमूँ प्रभु चरणों में।।13।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथी के मृगशिर, नक्षत्र रहा अपराण्ह समय।
उद्यान सहेतुक शाल्मलितरु, के नीचे केवल सूर्य उदय।।
संभव जिनवर का तरु अशोक, वर समवसरण में शोभ रहा।
भव भ्रमण निवारण हेतू मैं, पूजूँ केवल तिथि आज यहाँ।।14।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत सुदी षष्ठी तिथि थी, अपराण्ह काल में ध्यान धरा।
इक सहस साधु सह कर्मनाश, निज सौख्य लिया प्रभु शिवंकरा।।
सम्मेदशिखर भी पूज्य बना, तिथि पूज्य बनी सुरगण आये।
निर्वाण कल्याणक पूजा की, हम अर्घ्य चढ़ाकर गुण गायें।।15।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

–नरेन्द्र छंद –

पुरी अयोध्या में सिद्धार्था, माता के आँगन में।
रत्न बरसते पिता स्वयंवर, बाँट रहे जन जन में।।
मास श्रेष्ठ वैशाख शुक्ल की, षष्ठी गर्भ कल्याणक।
इन्द्र महोत्सव करते मिलकर, जजें गर्भ कल्याणक।।16।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां श्रीअभिनंदननाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, इन्द्र शची सह आये।
जिन बालक को गोदी में ले, सुरगिरि पर ले जायें।।
माघ शुक्ल द्वादश तिथि उत्तम, जन्म महोत्सव करते।
जिनवर जन्म कल्याणक पूजत, हम भवदधि से तरते।।17।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

सुंदर नगर मेघ का विनशा, देख प्रभू वैरागी।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, प्रभु गुण में अनुरागी।।
हस्तचित्र पालकि में प्रभु को, बिठा अग्रवन पहुँचे।
माघ शुक्ल बारस दीक्षा ली, बेला कर प्रभु तिष्ठे।।18।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल चौदश तिथि जिनवर, असनवृक्ष तल तिष्ठे।
बेला करके शुक्ल ध्यान में, घातिकर्म रिपु दग्धे।।
केवलज्ञान ज्योति जगते ही, समवसरण की रचना।
अर्घ चढ़ाकर पूजत ही मैं, झट पाऊँ सुख अपना।।19।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीअभिनंदननाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

प्रभु सम्मेदशिखर पर पहुँचे, योग निरोध किया जब।
तिथि वैशाख शुक्ल षष्ठी के, निज शिवधाम लिया तब।।
इन्द्र सभी मिल मोक्ष कल्याणक, पूजा किया रुची से।
अभिनंदन जिन निर्वाण कल्याणक, जजूँ यहाँ भक्ती से।।20।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां श्रीअभिनंदननाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमामीति स्वाहा।

(5)

–नरेन्द्र छंद –

पुरी अयोध्या पिता मेघरथ, सती मंगला माता।
श्रावण शुक्ल द्वितीया तिथि में, गर्भ बसे जग त्राता।।
इन्द्र स्वयं सुरगण सह आये, मात पिता को पूजें।
पुनर्जन्म के नाश हेतु हम, गर्भकल्याणक पूजें।।21।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां श्रीसुमतिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल एकादशि तिथि में, जन्म लिया तीर्थेश्वर।
सुरपति जिन बालक को लेकर, बैठे ऐरावत पर।।
सुरगिरि पहुँचे जन्म महोत्सव, किया इन्द्रगण मिलकर।
जन्म कल्याणक मैं नित पूजूँ, मिले जन्म अविनश्वर।।22।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण पाय विरती हो, इन्द्र सभी मिल आये।
सुदि नवमी वैशाख तिथी, अभयंकरि पालकि लाये।।
प्रभू सहेतुक वन में पहुँचे, बेला कर दीक्षा ली।
दीक्षा कल्याणक जजते ही, मिले स्वात्मगुणशैली।।23।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां श्रीसुमतिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी ग्यारस उद्यान, सहेतुक में प्रभु पहुँचे।
तरु प्रियंगु के नीचे तिष्ठे, केवल रवि बन चमके।।
धनपति समवसरण रच करके, ज्ञानकल्याणक पूजें।
गंधकुटी में सुमति जिनेश्वर, पूजत भव से छूटें।।24।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल ग्यारस अपराण्हे, सम्मेदाचल से ही।
मृत्युनाश मृत्युंजय होकर, स्वात्मा में तिष्ठे ही।।
सुमतिनाथ का मोक्षकल्याणक, इन्द्र जजें भक्ती से।
मैं पूजूँ इस कल्याणक को, नशें कर्म युक्ती से।।25।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

–चौबोल छंद –

कौशाम्बी नगरी के राजा, धरण राज के आंगन ही।
वर्षे रतन सुसीमा माता, हर्षी गर्भ बसे प्रभुजी।।
माघकृष्ण छठ तिथि उत्तम थी, इन्द्रों ने इत आ करके।
गर्भ महोत्सव किया मुदित हो, हम भी पूजें रुचि धरके।।26।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां श्रीपद्मप्रभजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा तेरस तिथि में, पद्मप्रभू ने जन्म लिया।
इन्द्राणी माँ के प्रसूतिगृह, जाकर शिशु का दर्श किया।।
सुरपति जिन शिशु गोद में लेकर, रूप देख नहिं तृप्त हुआ।
नेत्र हजार बना करके प्रभु, दर्शन कर अति मुदित हुआ।।27।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मृति से विरक्त होकर, कार्तिक कृष्णा तेरस में।
निवृति करि पालकी सजाकर, इन्द्र सभी आये क्षण में।।

सुभग मनोहर वन में पहुँचे, प्रभु ने दीक्षा स्वयं लिया।
बेला कर ध्यानस्थ हो गये, जजत मिले वैराग्य प्रिया।।28।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभजिनजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी पूनम तिथि शुभ थी, नाम मनोहर वन उत्तम।
शुक्लध्यान से घात घातिया, केवलज्ञान हुआ अनुपम।।
सुरपति ऐरावत गज पर चढ़, अगणित विभव सहित आये।
गजदंतों सरवर कमलों पर, अप्सरियाँ जिनगुण गायें।।29।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां श्रीपद्मप्रभजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि चौथ तिथी सायं, प्रभु सम्मेद शिखर गिरि से।
एक हजार मुनी के संग में, मुक्ति राज्य पाया सुख से।।
इन्द्र असंख्यों देव देवियों, सहित जहाँ आये तत्क्षण।
प्रभु निर्वाण कल्याणक पूजें, जजूँ भक्ति से मैं इस क्षण।।30।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपद्मप्रभजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

–नरेन्द्र छंद –

प्रभु मध्यम ग्रैवेयक तजकर, वाराणसि में आये।
सुप्रतिष्ठ पितु माता पृथ्वी-षेणा गर्भ में आये।।
भादों सुदि छठ तिथी श्रेष्ठ में, इन्द्र महोत्सव कीना।
गर्भकल्याणक पूजा करते, हमने समकित लीना।।31।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी बारस में जन्मे, सुरपति आसन कंपे।
देवगृहों में सबविध बाजे, स्वयं स्वयं बज उठते।।

जन्म न्हवन उत्सव विधिपूर्वक, किया इन्द्र सुरगणने।
जन्मकल्याणक पूजा करते, परमानंद हो क्षण में।।32।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु परिवर्तन देख विरक्ती, ज्येष्ठ सुदी बारस में।
मनोगती पालकि सुर लाये, प्रभु बैठे उस क्षण में।।
इन्द्र सहेतुक वन में पहुँचे, प्रभु ने केश उखाड़े।
नमः सिद्ध कह दीक्षा धारी, पूजत कर्म पछाड़े।।33।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठ सायं प्रभु ने, घाति विनाश किया था।
बाग सहेतुक तरु शिरीष तल, केवलज्ञान हुआ था।।
इन्द्र सातविध सुरसेना सह, आये समवसरण में।
ज्ञान कल्याणक पूजा करते, ज्ञान ज्योति हो क्षण में।।34।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सप्तमी प्रभाते, गिरि सम्मेद शिखर से।
मुक्तिनगर में वास किया था, एक हजार मुनी ले।।
काल अनंतानंत वहीं पे, सुस्थिर हो तिष्ठेंगे।
जिनसुपार्श्व की पूजा करते, कर्ममेघ विघटेंगे।।35।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

–गीताछंद –

जिनचंद्र विजयंते अनुत्तर, से चये आये यहाँ।
महासेन पितु माँ लक्ष्मणा के, गर्भ में तिष्ठे यहाँ।।

शुभ चंद्रपुरि में चैत्रवदि, पंचमि तिथी थी शर्मदा।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, मैं पूजहूँ गुणमालिका।।36।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां श्रीचंद्रप्रभजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्र जिनवर पौष कृष्णा, ग्यारसी शुभयोग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँलोक में भी हर्ष छाया, तीर्थकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषि भी वहाँ।।37।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श में मुख देखकर, वैराग्य उपजा नाथ को।
वदि पौष एकादशि दिवस, इंद्रादि सुर आये प्रभो।।
पालकी विमला में बिठा, सर्वर्तुवन में ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली किया, बेला जगत वंदित हुए।।38।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमि तिथी, सर्वर्तुवन में आ गये।
तरु नाग नीचे ज्ञान केवल, हुआ सुरगण आ गये।।
धनपति समवसृति को रचा, श्रीचंद्रप्रभ राजें वहाँ।
द्वादशगणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।39।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रजिन फाल्गुन सुदी, सप्तमि निरोधा योग को।
सम्मेदगिरि से मुक्ति पायी, जजें सुरपति भक्ति सों।।
हम भक्ति से श्रीचंद्रप्रभ, सम्मेदगिरि को भी जजें।
निज आत्म संपति दीजिए, इस हेतु ही प्रभु को भजें।।40।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

–रोला छंद –

प्राणत स्वर्ग विहाय, काकंदीपुर आये।
इंद्र सभी हर्षाय, गर्भकल्याण मनाये।।
पिता कहे सुग्रीव, जयरामा जगमाता।
नवमी फागुन कृष्ण, जजत मिलेसुखसाता।।41।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां श्रीपुष्पदंतनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर एकम शुक्ल, जन्म लिया तीर्थंकर।
रुचकवासिनी देवि, जातकर्म में तत्पर।।
शची प्रभू को गोद, ले स्त्रीलिंग छेदा।
जन्म महोत्सव देव, करके भव दुख भेदा।।42।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्का गिरते देख, प्रभु विरक्त अपराण्हे।
मगसिर शुक्ला एक, तप लक्ष्मी को वरने।।
पालकि रविप्रभ बैठ, पुष्पकवन में पहुँचे।
जजूँ आज शिर टेक, तपकल्याणक हित मैं।।43।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला दूज, सायं पुष्पक वन में।
घाति कर्म से छूट, नागवृक्ष के तल में।।
केवल रवि प्रगटाय, समवसरण में तिष्ठे।
स्वात्म निधी मिल जाय, इसीलिए हम पूजें।।44।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां श्रीपुष्पदंतनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला आठ, सायं सहस मुनी ले।
सकल कर्म को काट, गिरि सम्मेद शिखर से।।
पुष्पदंत भगवंत, सिद्धिरमा के स्वामी।
जजत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।45।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां श्रीपुष्पदंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10)

–गीता छंद –

शीतल प्रभू अच्युत सुरग से, भद्रिकापुरि आ गये।
दृढ़रथ पिता माता सुनंदा, के गरभ में आ गये।।
तिथि चैत्र कृष्णा अष्टमी, धनपति रतन बरसा रहा।
इन्द्रादि गर्भोत्सव किया, पूजत गरभ के दुख दहा।।46।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि माघ कृष्णा द्वादशी, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, सुर इन्द्र थे हर्षित तबे।।
सुरशैल पर पांडुकशिला पे, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत, मेरा जनम पावन हुआ।।47।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमनाश देखा नाथ के, मन में विरक्ती छा गई।
वदि माघ बारस पालकी, शुक्रप्रभा तब आ गई।।
सुरपति सहेतुक बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
सिद्धं नमः कह लोच कर, दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।48।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदि चौदश जिनेश्वर, शुक्ल ध्यानी हो गये।
तब बेलतरु तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।

सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वचपीयूष से, तारा जजूँ जिनसूर्य को।।49।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशीतलनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टम तिथी, सम्मेदगिरि पे जा बसे।
इक सहस साधू साथ ले, मुक्तीनगर में जा बसे।।
अतिशय अतीन्द्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पा लिया।
शीतल प्रभू का मोक्षकल्याणक, जजत निजसुख लिया।।50।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11)

–चौपाई छंद–

सिंहपुरी पितु विष्णूमित्र। नंदा माँ के गर्भ पवित्र।।
ज्येष्ठ कृष्ण छठ तिथि अभिराम। मैं पूजूँ इत गर्भ कल्याण।।51।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस जन्म। सुरपति किया मेरु पे न्हवन।।
सुरगण उत्सव करें अपार। जजत प्रभू को हर्ष अपार।।52।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु वसंत श्री विनशी जबे। बारह भावन भायी तबे।।
फाल्गुन वदि ग्यारस पूर्वाण्ह। जजूँ प्रभू का तप कल्याण।।53।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी मावस अपराण्ह, तुंबुर तरु नीचे धर ध्यान।
पाँच सहस धनु अधर जिनेश, जजूँ ज्ञान कल्याण हमेश।।54।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यायां श्रीश्रेयांसनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि पूनो श्रेयांस, कर्म नाश करके शिवकांत।
गिरि सम्मेद पूज्य जग सिद्ध, नमूँ मोक्ष कल्याण प्रसिद्ध।।55।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां श्रीश्रेयांसनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12)

–गीताछंद–

दिव महाशुक्र विमान से, च्युत हो प्रभू चंपापुरी।
वसुपूज्य पितु माता जयावति, गर्भ आये शुभ घरी।।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भ कल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से छुटें।।56।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां श्रीवासुपूज्यजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, सुरगृह स्वयं बाजे बजे।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुर शैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।57।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांतिसुर स्तुति किया।।
इन्द्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तप कल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया।।58।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन मनोहर में तरु कदंबक, तले प्रभु थे ध्यान में।
शुभ माघ शुक्ला द्वितीया, प्रभु केवली भास्कर बनें।।

धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादशसभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते।।59।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्रीवासुपूज्यजिनज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश तिथी, चंपापुरी से नाथ ने।
संपूर्ण कर्म विनाश कर, शिव वल्लभा के पति बने।।
सौधर्म इन्द्र सुरादिगण, हर्षित हुए वंदन करें।
हम वासुपूज्य जिनेन्द्र की, निर्वाण पूजा को करें।।60।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13)

–रोला छंद –

पुरी कंपिला नाम, पितु कृतवर्मा गृह में।
जयश्यामा वर मात, गर्भ बसे शुभ तिथि में।।
ज्येष्ठ वदी दश श्रेष्ठ, सुरपति नरपति पूजें।
नमूँ आज शिर टेक, जजूँ कर्म अरि धूजें।।61।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां श्रीविमलनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में त्रिभुवननाथ, चौथ माघ सुदि तिथि में।
सुरनर हुये सनाथ, शांति हुई तिहुँजग में।।
मेरु शिखर ले जाय, इन्द्र किया जन्मोत्सव।
पूजूँ शीश झुकाय, जन्मकल्याण महोत्सव।।62।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फ विनशती देख, चित वैराग्य समाया।
माघ चतुर्थी शुक्ल, सुरगण शीश नमाया।।

गये सहेतुक बाग, देवदत्त पालकि में।
नमूँ नमूँ नत माथ, तपकल्याणक प्रभु मैं।।63।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथजिनतपःकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ, जामुनतरु के नीचे।
नशा घाति का क्लेश, केवलज्ञान उदय से।।
समवसरण प्रभु आप, गगनांगण में शोभे।
ज्ञानकल्याणक नाथ, जजत भावश्रुत दीपे।।64।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां श्रीविमलनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ जिनराज, श्रीसम्मेदशिखर से।
कर्म अघाति विनाश, मुक्तिधाम में पहुँचे।।
वदि अष्टमि आषाढ़, मोक्षकल्याणक तिथि है।
मोहारि को पछाड़, जजत लहूँ निज सुख है।।65।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाअष्टम्यां श्रीविमलनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14)

–सखी छंद –

सिंहसेन अयोध्यापति थे, जयश्यामा गर्भ बसे थे।
कार्तिक वदि एकम तिथि में, प्रभु गर्भकल्याणक प्रणमें।।66।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां श्रीअनंतनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस में, सुर मुकुट हिले जिन जन्में।
अठ एक हजार कलश से, जिन न्हवन किया सुर हरषें।।67।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस थी, उल्का गिरते प्रभु विरती।
तप लिया सहेतुक वन में, पूजत मिल जावे तप मे।।68।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत अमावस्या के, पीपल तरु तल जिन तिष्ठे।
केवल रवि उगा प्रभू के, मैं जजूँ त्रिजग भी चमके।।69।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां श्रीअनंतनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत आमावसी यम नाशा, शिवनारि वरी निज भासा।
सम्मेद शिखर को जजते, निर्वाण जजत सुख प्रगटे।।70।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां श्रीअनंतनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15)

–चौपाई –

रत्नपुरी पितु भानु महान, मात सुव्रता गर्भ निधान।
सुदि तेरस वैशाख सुरेन्द्र, जजें गर्भ कल्याण जिनेन्द्र।।71।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस जिन जन्म, सुरपति किया महोत्सव धन्य।
नाम रखा श्रीधर्म जिनेन्द्र, जन्म कल्याण जजें शत इन्द्र।।72।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देख वैराग्य, नागदत्त पालकि बड़भाग्य।
माघ सुदी तेरस वन शाल, दीक्षा धरी नमूँ नत भाल।।73।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तपत्रतरु तल धर ध्यान, घात घाति ले केवलज्ञान।
समवसरण में प्रभु राजंत, पौष पूर्णिमा इन्द्र जजंत।।74।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां श्रीधर्मनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ चतुर्थी सुदि प्रत्यूष, गिरि सम्मेद मुक्ति में तोष।
शिवकल्याणक पूजें इन्द्र, जजत मिले निज सौख्य अनिंद्य।।75।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीधर्मनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16)

–रोला छंद –

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।76।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।77।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।78।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।79।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।80।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17)

–दोहा–

श्रावण वदि दशमी तिथी, गर्भ बसे भगवान।
इंद्र गर्भ मंगल किया, मैं पूजूँ इत आन।।81।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां श्रीकुंथुनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सित वैशाख की, जन्में कुंथुजिनेश।
किया इंद्र वैभव सहित, सुरगिरि पर अभिषेक।।82।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
इन्द्र सभी मिल आयके, किया कुंथु पद सेव।।83।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तिथि तीज में, प्रगटा केवलज्ञान।
समवसरण में कुंथुजिन, करें भव्य कल्याण।।84।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां श्रीकुंथुनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, तिथि निर्वाण पवित्र।
कुंथुनाथ के पदकमल, जजतें बनूँ पवित्र।।85।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18)

–सखी छंद–

फाल्गुन कृष्णा तृतिया में, प्रभु गर्भ निवास किया तें।
सुरपति ने उत्सव कीना, हम पूजें भवदुखहीना।।86।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां श्रीअरनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर शुक्ला चौदस के, प्रभुजन्म लिया सुर हर्षे।
मेरू पर न्हवन हुआ है, इन्द्रों ने नृत्य किया है।।87।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीअरनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदी दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इंद्रों से पूजा पाई, हम पूजें मन हरषाई।।88।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां श्रीअरनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवल रवि प्रकटा निज में।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।89।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां श्रीअरनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

शुभ चैत्र अमावस्या में, मुक्तिश्री परणी प्रभु ने।
इन्द्रों ने की प्रभु अर्चा, पूजन से निजसुख मिलता।।90।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां श्रीअरनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19)

–नरेन्द्र छंद –

मिथिलापुरी में कुंभ नृपति गृह, प्रजावती रानी को।
सोलह स्वप्न दिखा प्रभु आये, गर्भ बसे अतिसुख सों।।
चैत्र सुदी एकम तिथि उत्तम, सुरपति उत्सव कीना।
हम पूजें प्रभु गर्भकल्याणक, भव भव दुःख क्षय कीना।।91।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां श्रीमल्लिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस प्रभु जन्में, त्रिभुवन धन्य हुआ था।
रुचकाचल देवियाँ आय के, जातक कर्म किया था।।
सुरगिरि पर जन्माभिषेक कर, सुरगण धन्य हुये तब।
जन्मकल्याणक जजते मेरे, संकट दूर हुये सब।।92।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीमल्लिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण हुआ प्रभु को जब, बाल ब्रह्मचारी ही।
देव जयंता पालकि लाये, मगसिर सुदि ग्यारस थी।।
श्वेतबाग में पहुँच प्रभू ने, दीक्षा स्वयं लिया था।
तपकल्याणक पूजा करके, सुरगण पुण्य लिया था।।93।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीमल्लिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी दुतिया वन में प्रभु, तरु अशोक तल तिष्ठे।
मोह नाश दशवें गुणथाने, बारहवें में पहुँचे।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी, अंतराय को नाशा।
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, लोकालोक प्रकाशा।।94।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां श्रीमल्लिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

फाल्गुन सुदि पंचमि तिथि उत्तम, गिरि सम्मेद पर तिष्ठे।
चार अघाती कर्मनाश कर, मोक्षधाम में पहुँचे।।
इन्द्र गणों ने उत्सव करके, तांडवनृत्य किया तब।
शिवकल्याणक पूजा करते, जीवन सफल हुआ अब।।95।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां श्रीमल्लिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20)

–रोला छंद –

पिता सुमित्र नरेश, राजगृही के शास्ता।
सोमावती के गर्भ, बसें जगत शिर नाता।।
श्रावण कृष्णा दूज, इन्द्र जजें पितु माँ को।
जजूँ गर्भ कल्याण, मिले आत्मनिधि मुझको।।96।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, वदि वैशाख दुवादश।
इन्द्र लिया शिशु गोद, पहुँचे पांडुशिला तक।।
एक हजार सुआठ, कलशों से नहलाया।
जजत जन्म कल्याण, पुनि पुनि जन्म नशाया।।97।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण निमित्त, वदि वैशाख सुदशमी।
अपराजिता पालक्कि, नीलबाग में प्रभुजी।।
सिद्धं नमः उचार, स्वयं ग्रही प्रभु दीक्षा।
नमूँ नमूँ शत बार, मिले महाव्रत दीक्षा।।98।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक तरु तल नाथ, वदि वैशाख नवमि के।
केवलज्ञान विकास, समवसरण में तिष्ठे।।

श्रीविहार में चरण तले, प्रभु स्वर्ण कमल थे।
नमूँ नमूँ नतमाथ, ज्ञान कल्याणक रुचि से।।99।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद सुशैल, फाल्गुन वदि बारस में।
किया मृत्यु को दूर, मुक्तिरमा ली क्षण में।।
नमूँ मोक्ष कल्याण, कर्म कलंक नशाऊँ।
मुनिसुव्रत भगवान, चरणों शीश झुकाऊँ।।100।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21)

–चौपाई छंद –

मिथिलापुरी में विजय पिता थे। मात वप्पिला गर्भ बसे थे।।
वदि आसोज दुतिय हम पूजें। गर्भ कल्याण जजत अघ छूटें।।101।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां श्रीनमिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि आषाढ़ दशमि नमि जन्में। न्हवन किया सुरगण इन्द्रों ने।।
जन्म कल्याणक मैं नित वंदूँ। जन्म मरण के दुःख को खंडूँ।।102।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्रीनमिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाति स्मृति से हुई विरक्ती। तिथि आषाढ़ वदी दशमी थी।।
उत्तरकुरु पालकि से जाके। दीक्षा ली थी चैत्रवनी में।।103।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्रीनमिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस सायं के। वकुल वृक्ष के नीचे तिष्ठे।।
घट में केवलज्ञान प्रकाशा। जजूँ प्रभो! भविकमल विकासा।।104।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीनमिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

वदि चौदस वैशाख निशांते। गिरि सम्मेद ध्यान में तिष्ठे।।
मुक्तिरमा को वरण किया था। इन्द्रों ने बहु भक्ति किया था।।105।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीनमिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22)

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

श्रीसमुद्रविजय शौरीपुरि, नृप पितु मात शिवादेवी।
गर्भ बसे शुभ स्वप्न दिखाकर, तिथि कार्तिक शुक्ला षष्ठी।।
गर्भकल्याणक पूजा करते, मिले राह कल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।106।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
श्रावण शुक्ला छठ में मति श्रुत, अवधिज्ञानि प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।
जन्मकल्याणक पूजा करते, मिले राह उत्थान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।107।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
चले ब्याहने राजुल को, पशु बंधे देख वैराग्य हुआ।
श्रावण सुदि छठ सहस्राम्र वन, में प्रभु दीक्षा स्वयं लिया।

दीक्षा तिथि जजते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।108।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

आश्विन सुदि एकम पूर्वाण्हे, ऊर्जयंत गिरि पर तिष्ठे।
केवलज्ञान सूर्य प्रगटा तब, प्रभु को वांसवृक्ष नीचे।।
समवसरण में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।109।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां श्रीनेमिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

प्रभु गिरनार शैल से मुक्ती, रमा वरी शिवधाम गये।
सुदि आषाढ़ सप्तमी सुरगण, वंद्य नेमि जगपूज्य हुए।।
जो निर्वाण कल्याणक पूजें, मिले राह निर्वाण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।110।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां श्रीनेमिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23)

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितीया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ.।।111।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ.।।112।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ.।।113।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।

जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

चैत्रवदी सुचतुर्थी[1] प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ.।।114।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।115।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24)

–गीता छंद –

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।116।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. उत्तरपुराण में भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्दशी है।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।117।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।118।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।119।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।120।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभुछंद –

चौबीस जिनेश्वर तीर्थंकर, भक्तों को सब सुखदाता हैं।
संपूर्ण अमंगल दूर करें, नित नित नव मंगलदाता हैं।।

पूर्णार्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं, संपूर्ण मनोरथ पूर्ण करें।
कैवल्य ज्ञानमति देकर के, निज पद देकर निज पास करें।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

चौबीस यक्षों के अर्घ

–दोहा–

समवसरण में भक्तियुत, तीर्थंकर के पास।
यक्ष यक्षिणी नित रहे, उन्हें बुलाऊँ आज।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चाल शेर–

श्री आदिनाथ के निकट जो भक्ति से रहें।
'गोवदन' यक्ष नाम जिनका सूरिवर कहें।।
जिन नाथ के शासन के देव आइये यहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिये सुख कीजिये यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवस्य शासनदेव गोमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री अजितनाथ के निकट जो नित्य ही रहे।
शासनसुदेव 'महायक्ष' नाम श्रुत कहे।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य शासनदेव महायक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

सम्भव जिनेश के समोसरण में नित रहे।
जिनपाद कमल भक्त 'त्रिमुख' नाम यक्ष है।।जिन.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथस्य शासनदेव त्रिमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तीर्थेश अभीनंदन के पास में सदा।
प्रभुपाद कमलभक्ति 'यक्षेश्वर' करे मुदा।।

जिन नाथ के शासन के देव आइये वहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिये सुख कीजिये यहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य शासनदेव यक्षेश्वरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तीर्थेश सुमतिनाथ समवसरण में सदा।
नित पास रहे 'तुंबुरव' सुभक्त शर्मदा।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य शासनदेव तुंबुरवयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्रीपद्मनाथ पास भक्तिभाव से रहे।
'कुसुम' यक्षनाथ भक्त के विघन दहे।।जिन.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथस्य शासनदेव कुसुमयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ वरनंदि यक्ष नित नमें।
ये नाथ भक्त भव्य का रक्षक सदा बनें।।।जिन.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य शासनदेव वरनंदियक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंद्राप्रभू के पास 'विजय' यक्ष नित्य है।
जिन भक्तगणों के सभी विघ्नों को हरत है।।।।जिन.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य शासनदेव विजययक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री पुष्पदंत भक्तिलीन 'अजितयक्ष' है।
प्रभु भक्त के समस्त कष्ट हरण दक्ष है।।जिन.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तनाथस्य शासनदेव अजितयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शीतल जिनेश समवसरण में इसदा रहे।
वो नाथ भक्ति लीन 'ब्रह्मेश्वर' सुयक्ष है।।

जिन नाथ के शासन के देव आइये वहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिये सुख कीजिये यहाँ।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य शासनदेव ब्रह्मेश्वरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्रेयांसनाथ पास में 'कुमार यक्ष' है।
तीर्थेश भक्त विपद् दूर करन दक्ष है।।जिन.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य शासनदेव कुमारयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्रीवासुपूज्य पास में 'षण्मुख' सुयक्ष है।
जिन पूजकों के विघ्न दूर करन दक्ष है।।जिन.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य शासनदेव षण्मुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा–

सतत यक्ष 'पाताल' है, विमलनाथ के पास।
यज्ञ भाग उनके लिये, अर्पूं रुचि से आज।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य शासनदेव पातालयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री अनंत जिन पास में, 'किन्नर' यक्ष वसंत।
यज्ञ भाग उनके लिए, अर्पण करूँ तुरंत।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य शासनदेव किन्नरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

धर्मनाथ का 'किंपुरुष', शासन देव प्रसिद्ध।
जिन भक्तों के कार्य सब, करे शीघ्र ही सिद्ध।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य शासनदेव किंपुरुषयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतिनाथ के पास में, 'गरुड़' यक्ष निवसंत।
जिन भक्तों का भक्त है, करे विघन घन अंत।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव गरुड़यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

कुंथुनाथ के पास में, यक्ष रहे 'गंधर्व'।
जिन भक्तों के प्रेम से पूरे वांछित सर्व।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य शासनदेव गंधर्वयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अरहनाथ के निकट में, रहे 'महेन्द्र' सुयक्ष।
जिन पूजा के विघ्न को दूर करन में दक्ष।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य शासनदेव महेन्द्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मल्लिनाथ के पास में, 'कुबेर' यक्ष निवसंत।
निज पूजक के प्रेम से, करें उपद्रव शांत।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य शासनदेव कुबेरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत के पास में, 'वरुण' नाम के यक्ष।
जिनपद भक्तों के सतत, इष्ट सिद्धि में यक्ष।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेव वरुणयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नमि जिनके सानिध्य में, विद्युत्प्रभ यक्षेन्द्र।
जिन शासन का भक्त ये, हरे भव्यजन खेद।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य शासनदेव विद्युत्प्रभयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नेमिनाथ के पास में, 'सर्वाण्हयक्ष।
भक्तों को सुख शांति दे, हरे परस्पर द्वंद।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य शासनदेव सर्वाण्हयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

समवसरण में पार्श्व के यक्ष सदा निवसंत।
तिनहिं नाम 'धरणेन्द्र' है, रहे भक्त के संग।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेव धरणेन्द्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

महावीर जिन पास में, 'गुह्यक' यक्ष वसंत।
द्वितिय नाम 'मातंग' भी अर्घ चढ़ा पूजंत।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेव मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-गीता छंद–

तीर्थंकरों के पास रहते, सदा जिनवर भक्त हैं।
गोमुख[1] प्रमुख ये यक्ष चौबिस, धर्म के अनुरक्त हैं।।
ये जैन शासन की सतत, रक्षा करें वृद्धी करें।
सम्यक्त्व धारी हैं स्वयं, सब भव्य संकट परिहरें।।

–दोहा–

महाकल्पतरु यज्ञ में, आवो शासनदेव।
यज्ञ भाग तुम अर्पिहूँ, करो सहाय सदैव।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेवगोमुखप्रमुखसर्वयक्षा अत्र आगच्छत! आगच्छत! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

चौबीस यक्षिणी के अर्घ

–नरेन्द्र छंद–

वृषभदेव के समवसरण में, 'चक्रेश्वरी' सुयक्षी।
सम्यग्दर्शन गुण से मंडित, खंडे सर्व विपक्षी।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञ भाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवस्य शासनदेवि चक्रेश्वरी यक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

1. सभी यक्षों के नाम तिलोयपण्णत्ति के आधार से हैं।

अजितनाथ के समवसरण में, रहे 'रोहिणी' यक्षी।
जिन भक्ती में रत महिलायें, पूजा करतीं अच्छी।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञ भाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य शासनदेवि रोहिणीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

संभव जिनके निकट भक्तिरत, 'प्रज्ञप्ती' यक्षी हैं।
जिन भक्तों के संकट हरती, अधर्म प्रतिपक्षी हैं।।महा.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य शासनदेवि प्रज्ञप्तीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अभिनंदन के निकट रहें नित, 'वज्रश्रृंखला देवी'।
जिन पूजक के विघ्न निवारें, जिन चरणाम्बुजसेवी।।महा.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य शासनदेवि वज्रश्रृंखलायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'पुरुषदत्ता' यक्षिणी नितप्रति, सुमतिनाथ पदभक्ता।
जो जिनभक्त धर्म के प्रेमी, उन गुण में अनुरक्ता।।महा.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य शासनदेवि पुरुषदत्तायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'मनोवेगा' कही यक्षिणी, पद्मप्रभू पद सेवें।
जो जिनशासन के अनुरागी, उनको सब सुख देवें।।महा.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य शासनदेवि मनोवेगायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पास रहें नित, सुरी 'पुरुषदत्ता' हैं।
द्वितिय नाम वाली यक्षी नित, जिनगुण अनुरक्ता हैं।।महा.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पुरुषदत्तायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंद्रप्रभू के चरण लीन प्रभु भक्त 'मनोवेगा' हैं।
अपर नाम 'ज्वालामालिनी' ये धर्मनीतिवेत्ता हैं।।महा.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य शासनदेवि ज्वालामालिनियक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

पुष्पदंत के चरण कमलरत, 'भृकुटी' यक्षी।
द्वितिय नाम महाकाली है, भविजन विघ्न विपक्षी।।महा.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य शासनदेवि भृकुटीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शीतल जिनकी 'यक्षि मानवी', देवी प्रियंवदा है।
सुख संपति सौभाग्य बढ़ातीं, जिन भक्तों के सदा हैं।।महा.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य शासनदेवि मानवीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नाम कहा 'गौरी' देवी ये, सम्यग्दर्शन युत हैं।
श्री श्रेयांस के समवसरण में, जिनपद पंकजरत हैं।।महा.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य शासनदेवि गौरीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

वासुपूज्य जिनशासन देवी 'गांधारी सु कही है।
शुक्लवर्ण सम शुभ्र गुणों से जिनपद भक्त रही है।।महा.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यस्य शासनदेवि गांधारीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा–

'वैरोटीयक्षी' सदा, विमलनाथ पद भक्त।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, ग्रहण करो हे यक्षि।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य शासनदेवि वैरोटीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'अनंतमती' यक्षी रहें, प्रभु अनंत जिन पास।
अर्घ समर्पूं प्रेम से, ग्रहण करो तुम आज।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य शासनदेवि अनन्तमतीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शासनदेवी 'मानसी' धर्मनाथ गुणलीन।
अर्घ समर्पूं नित्य मैं, करो विघन सब क्षीण।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य शासनदेवि मानसीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतिनाथ की यक्षिणी महामानसी मान्य।
पूजूँ अर्घ समर्प्य मैं, करो शांति जगमान्य।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'जयादेवी' यक्षिणी, कुंथुनाथ पद भक्त।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, करो उपद्रव नष्ट।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य शासनदेवि जयायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अरहनाथ की यक्षिणी 'विजयादेवी' ख्यात।
अर्घ समर्पूं यज्ञ में, करो विजय सुप्रभात।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य शासनदेवि विजयायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मल्लिनाथ की यक्षिणी, 'अपराजिता' वंसत।
रुचि से अर्घ समर्प्यते, धर्मविजय विलसंत।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य शासनदेवि अपराजितायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत शासनरता, 'बहुरूपिणी' विख्यात।
अर्घ समर्पूं प्रेम से, करो पराजित पाप।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेवि बहुरूपिणीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नमि जिनकी 'चामुंडी' है शासन देवी सिद्ध।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, हो धन धान्य समृद्ध।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य शासनदेवि चामुण्डीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'कूष्मांडिनी' यक्षिणी, नेमिनाथ पद भक्त।
रुचि से अर्घ चढ़ावते, नाशो सर्व अनिष्ट।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य शासनदेवि कूष्माण्डीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

माता 'पद्मावती' करें, पार्श्वनाथ गुणगान।
अर्घ समर्पण कर जजूँ, भरो सौख्य धनधान।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावतीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

महावीर जिन भक्तिका, 'सिद्धायिनी' प्रसिद्ध।
रुचि से अर्घ चढ़ावते, करो मनोरथ सिद्ध।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेवि सिद्धायिनीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावलों से 108 बार या 27 बार मंत्र जपें)

जयमाला

–चौबोल छंद –

आवो हम सब करें वंदना, चौबीसों भगवान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।
जय जय जिनवरं-4

आदिनाथ युग आदि तीर्थंकर, अजितनाथ कर्मारि हना।
संभवजिन भव दुःख के हर्ता, अभिनंदन आनंद घना।।

सुमतिनाथ सद्बुद्धि प्रदाता, पद्मप्रभु शिवलक्ष्मी दें।
श्री सुपार्श्व यम पाश विनाशा, चन्द्रप्रभू निज रश्मी दें।।
केवलज्ञान सूर्य बन चमके, त्रिभुवन तिलक महान की।। तीर्थं.।।1।
जय जय जिनवरं-4

पुष्पदंत भव अंत किया है, शीतल प्रभु के वच शीतल।
श्री श्रेयांस जगत हित कर्ता, वासुपूज्य छवि लाल कमल।।
विमलनाथ ने अघ मल धोया, जिन अनंत गुण अन्तातीत।
धर्मनाथ वृषतीर्थ चलाया, शांतिनाथ शांतिप्रद ईश।।
शांतीच्छुक जन शरण आ रहे, ऐसे करुणावान की।।तीर्थं.।।2।।
जय जय जिनवरं-4

कुंथुनाथ करुणा के सागर, अर जिन मोह अरी नाशा।
मल्लिनाथ यममल्ल विजेता, मुनिसुव्रत व्रत के दाता।।
नमिप्रभु नियम रत्नत्रय धारी, नेमिनाथ शिवतिय परणा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, महावीर भविजन शरणा।।
इनने शिव की राह दिखाई, जन-जन के कल्याण की।।तीर्थं.।।3।।
जय जय जिनवरं-4

तीर्थंकर के जन्म समय से, दश अतिशय श्रुत में गाये।
केवलज्ञान प्रगट होते ही, दश अतिशय गणधर गायें।।
देवोंकृत चौदह अतिशय हों, सुंदर समवसरण रचना।
इन्द्र-इन्द्राणी देव-देवियाँ, गाते रहते गुण गरिमा।।
सभी भव्य गुण कीर्तन करते, अभयंकर जिननाम की।।तीर्थं.।।4।।
जय जय जिनवरं-4

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, भामंडल चामर सिंहासन।
तीन छत्र सुरदुंदुभि बाजे, दिव्यध्वनी है अमृतसम।।
आठ महा ये प्रातिहार्य हैं, गंधकुटी में प्रभु शोभें।
विभव वहाँ का सुर नर पशु क्या, मुनियों का भी मन लोभे।
गणधर गुरु भी संस्तुति करते, अविनश्वर भगवान की।।तीर्थं.।।5।।
जय जय जिनवरं-4

दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज ये, चार अनंत चतुष्टय हैं।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, फिर भी गुणरत्नाकर हैं॥
क्षुधा तृषादिक दोष अठारह, प्रभु के कभी नहीं होते।
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर, हित उपदेशी ही होते।।
परम पिता परमेश्वर स्वामिन्! पूजा कृपानिधान की।।तीर्थं.।।6।।
जय जय जिनवरं-4

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानान्त्यचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, को जजें जो भाव से।
निज आत्मा को शुद्धकर, छूटें तुरत भव दुःख से।।
संपूर्ण वांछित प्राप्त कर, अतिशायि सुख को पावते।
सज्ज्ञानमति कैवल्य कर, फिर पुनर्जन्म न धारते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–शंभु छंद –

जय ऋषभदेव जय अजितनाथ, संभवजिन अभिनंदन जिनवर।
जय सुमतिनाथ जय पद्मप्रभ, जिनसुपार्श्व चन्द्रप्रभ जिनवर।।
जय पुष्पदंत शीतल श्रेयांस, जय वासुपूज्य जिन तीर्थंकर।
जय विमलनाथ जिनवर अनंत, जय धर्मनाथ जय शांतीश्वर।।1।।

जय कुंथुनाथ अरनाथ मल्लि, जिन मुनिसुव्रत तीर्थेश्वर की।
जय नमिजिन नेमिनाथ पारस, जय महावीर परमेश्वर की।।
ये चौबीसों तीर्थंकर ही, भव्यों के शिवपथ नेता हैं।
ये कर्म अचल के भेत्ता हैं, त्रिभुवन के ज्ञाता दृष्टा हैं।।2।।

मलरहित[1] पसीना रहित[2], क्षीर[3] सम रुधिर रूप[4] अतिशय सुन्दर।
उत्तम संहनन[5] श्रेष्ठ आकृति[6], शक्ती अनंत[7] सुरभित[8] तनुधर।।
इक सहस आठ लक्षणधारी[9], प्रियहित वचनामृत[10] मन हरते[*]।।
दश अतिशय जन्मसमय से ही, तीर्थंकर के अद्भुत प्रगटें।।3।।

चउ सौ कोशों तक हो सुभिक्ष[1], आकाश गमन[2] नहिं प्राणी[3] वध।
नहिं भोजन[4] नहिं उपसर्ग[5] तुम्हें, सब विद्या के ईश्वर[6] चउमुख[7]।।
नहिं छाया[8] नहिं टिमकार नेत्र[9], नखकेश[10] नहीं बढ़ते प्रभु के[+]।
घाती के क्षय से दश अतिशय, केवलज्ञानी जिन के प्रगटे।।4।।

वर अर्ध मागधी भाषा[1] हो, आपस में मैत्रीभाव[2] धरें।
सब ऋतु के फल अरु फूल खिलें[3], भू[4] रत्नमयी सौंदर्य धरे।।
सुरभित[5] अनुकूल हवा चलती, सब जन परमानंदित[6] होते।
वायूकुमार सौगंध्य वायु से, भू[7] को धूलिरहित करते।।5।।

---

* ये दश अतिशय जन्म से ही तीर्थंकर के होते हैं।

\+ केवल ज्ञान प्रगट होते ही ये दश अतिशय प्रगट हो जाते हैं।

गंधोदक वर्षा मेघदेव[8], करते हरियाले[9] खेत खिलें।
प्रभु के विहार में स्वर्ण कमल[10], सौगंधित जिनपद तले खिलें।।
ऋतु शरद सदृश आकाशविमल[11], अति स्वच्छ दिशायें[12] शोभ रहीं।
सुरपति आज्ञा से देव परस्पर, आह्वानन कर रहें सही।।6।।

यक्षेन्द्रों के मस्तक ऊपर, वरधर्म चक्र[13] अतिशय चमके।
तीर्थंकर प्रभु के आगे आगे, हजार आरों[14] से चमके[++]।।
तरुवर अशोक[1] सिंहासन[2] छत्रत्रय[3] भामंडल[4] सुरदुंदुभि[5]।
चौंसठ चामर[6] सुर पुष्पवृष्टि[7], दिव्यध्वनि[8] फैले योजन तक[+++]।।7।।

देवोपनीत चौदह अतिशय, अठ प्रातिहार्य महिमाशाली।
दर्शन व ज्ञान सुख वीर्य चार, आनन्त्य चतुष्टय गुणशाली।।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, घाती के क्षय से होते हैं।
सिद्धों के आठ कर्म क्षय से, उत्कृष्ट आठ गुण होते हैं।।8।।

जो क्षुधा तृषा भय क्रोध जरा, चिंता विषाद मद विस्मय हैं।
रति अरति राग निद्रा मृत्यू, जनि मोह रोग व पसीना[1] हैं।।
ये दोष अठारह माने हैं, इनसे नहिं बचा कोई जग में।
जो इनको जीते वे जिनेन्द्र, सौ इन्द्रों से नत त्रिभुवन में।।9।।

चन्द्रप्रभु पुष्पदंत शशि सम, छवि पार्श्व सुपार्श्व हरित तनु हैं।
श्री वासुपूज्य औ पद्मप्रभु, तनु लाल कमल सम सुंदर हैं।।
नेमी मुनिसुव्रत नीलमणी, जिन सोलह कांचन तनु सुंदर।
ये वर्णसहित भी वर्णरहित, चिन्मूर्ति अमूर्तिक परमेश्वर।।10।।

प्रभु आदिनाथ ने प्रथम पारणा, इक्षूरस आहार लिया।
तेईस सभी तीर्थंकर ने, क्षीरान्न प्रथम आहार लिया।।
महावीर प्रभू के सब आहारों, में रत्नों की वृष्टि हुई[1]।
तेइस जिन के पहले आहार में, रत्नवृष्टि अतिशायि हुई।।11।।

++ ये चौदह अतिशय देवकृत हैं। +++ ये आठ प्रातिहार्य हैं। १. ये अठारह दोष हैं।

१. हरिवंशपुराण सर्ग ६०, पृ. ७२४।

श्री वासुपूज्य मल्ली नेमी, श्री पार्श्वनाथ महावीर कहे।
ये पाँचों बाल ब्रह्मचारी, मेरे मन में नित बसे रहें।।
श्री वृषभदेव, जिन वासुपूज्य, नेमी प्रभु पर्यंकासन से।
बाकी सब जिनवर कायोत्सर्ग, आसन से छूटे कर्मों से।।12।।

श्री वृषभदेव अष्टापद से, श्री वासुपूज्य चंपापुरि से।
श्री नेमि ऊर्जयंतगिरि से, महावीर प्रभू पावापुरि से।।
सम्मेदशिखर से बीस प्रभू, तीर्थंकर मुक्ति पधारे हैं।
इन धाम को नित प्रति वंदूँ मैं, ये पावन करने वाले हैं।।13।।

शांती कुंथू अर तीर्थंकर, कुरुवंशतिलक त्रिभुवनमणि हैं।
मुनिसुव्रत नेमी यदुवंशी, श्रीपार्श्व उग्रकुल के मणि हैं।।
श्री वीरप्रभू नाथवंशी, औ शेष जिनेश्वर भुवि भास्कर।
इक्ष्वाकुवंश चूड़ामणि हैं, हमको होवें अविचल सुखकर।।14।।

जब तृतियकाल में तीन वर्ष, पंद्रह दिन अरु अठमास बचे।
माघवदी चौदश वृषभेश्वर, कर्मनाश शिवधाम बसे।।
जब चौथे युग में तीन वर्ष, पंद्रह दिन अरु अठ माह बचे।
तब वीरप्रभू कार्तिक मावस में, कर्मनाश शिवधाम बसे।।15।।

तीर्थंकर ज्ञान ज्योति भास्कर, भविजन मन कमल विकासी हैं।
अज्ञान अंधेरा दूर करें, सब लोकालोक प्रकाशी हैं।।
इन तीर्थंकर की दिव्यध्वनी, मंगलकरणी भवदधि तरणी।
चिन्मय चिंतामणि चेतन को, परमानंदामृत निर्झरणी।।16।।

जिन भक्ती गंगा महानदी, सब कर्म मलों को धो देती।
मुनिगण का मन पवित्र करके, तत्क्षण शिवसुख भी दे देती।।
भक्तों के लिए कामधेनू, सब इच्छित फल को फलती है।
मेरे भी 'ज्ञानमती' सुख को, पूरण में समरथ बनती है।।17।।

–दोहा–

तीर्थंकर चौबीस ये, गुण रत्नाकर सिद्ध।
नमूँ अनंतों बार मैं, मिले रत्नत्रय निद्ध।18।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानान्तेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, को जजें जो भाव से।
निज आत्मा को शुद्धकर, छूटें तुरत भव दुःख से।।
संपूर्ण वांछित प्राप्त कर, अतिशायि सुख को पावते।
सज्ज्ञानमति कैवल्य कर, फिर पुनर्जन्म न धारते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के चरण कमल में, झुक-झुक शीश नमाऊँ।
सरस्वती का वंदन करके, त्रिविध साधु गुण गाऊँ।।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मंगल कर्ता जग में।
इनकी भक्ती से विधान यह, रचा सौख्यकर मैंने।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय प्रसिद्ध हुआ है।
गच्छ सरस्वति बलात्कार गण, इसमें मान्य हुआ है।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर जी।
इनके प्रथम शिष्य पट्टाधिप, गुरू वीरसागर जी।।2।।

मुझे आर्यिका दीक्षा लेकर, ज्ञानमती कर जग में।
ज्ञानामृत कण से पावन कर, सार्थक नाम दिया मे।।
तीर्थंकर भक्ती प्रसाद से, देव-शास्त्र-गुरु भक्ती।
मिली आत्मनिधि त्रिभुवन उत्तम, प्राप्त करन की शक्ती।।3।।

महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
हस्तिनागपुर में सुमेरु सह, जम्बूद्वीप स्थिर हो।।
चौबीसी मंदिर आदिक सब, जिनप्रतिमायें जब तक।
तब तक चौबीसी विधान लघु, जग में हो मंगलप्रद।।4।।

–दोहा–

चौबीसों जिनराज को, नमूं नमूं नत शीश।
ज्ञानमती कैवल्य हो, बनूं निजात्मनिधीश।।।5।।

।।इति शं भूयात्।।

चौबीस तीर्थंकर भगवान की मंगल आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

मैं तो आरती उतारूं रे चौबीसों जिनवर की।
जय जय चौबीसों जिनवर, जय जय जय।।टेक.।।
पहली आरती करूं कैलाश, गिरिवर अनुपम की।गिरिवर अनुपम की।।
मुक्ति पाये जहां वृषभेश, नाभि के नन्दन की।।नाभि के नंदन की।।
तीर्थ करतार कहे, युग के आधार रहे, महिमा है अपरम्पार।
हो हो जिनकी महिमा है अपरम्पार।।मैं तो.....।।1।।

दूजी आरती करूं सिद्धक्षेत्र, चम्पापुरिवर की।।चम्पापुरिवर की।।
वासुपूज्य जिनेश्वर ध्याय, वसुपूज्य नंदन की।।वसुपूज्य नंदन की।।
भक्ति करूँ झूम-झूम, नृत्य करूँ घूम-घूम, जीवन सुधारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारो रे।।मैं तो.....।।2।।

तीजी आरती महागिरिराज, गिरिनार पर्वत की।गिरिनार पर्वत की।।
राजुल त्याग चले नेमिनाथ, सिद्धि को वरने को।।सिद्धि को वरने को।।
दीक्षा ले साधु बने, मुक्ति के कांत बने, सिद्धि लोक राजे जा,
हो हो सिद्ध लोक विराजे जा।।मैं तो.....।।3।।

चौथी आरती करूं निर्वाण, पावापुरिवर की।।पावापुरिवर की।।
त्रिशलानंदन हैं वीर महावीर, मुक्ति के स्थल की।।मुक्ति के स्थल की।
कुण्डलपुर जन्म हुआ, कण-कण पवित्र हुआ, सिद्धार्थ के दरबार।
हो हो राजा सिद्धार्थ के दरबार।।मैं तो.....।।4।।

पंचम आरती करूं उस तीर्थ, अद्भुत अनुपम की।। अद्भुत अनुपम की।।
सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र, बीस जिनेश्वर की।। बीस जिनेश्वर की।।
'चंदनामति' आश करूँ, मन में विश्वास करूँ, भक्ति करूँ दिन रात।
हो हो प्रभु भक्ति करूं दिन रात।।मैं तो.....।।6।।.

णमोकार महामंत्र की महिमा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–अरे जग जा रे चेतन.....

अरे देखो रे! महिमा मंत्र की,
णमोकार की महिमा निराली है।।अरे...।।टेक.।।

एक कहानी सुन लो भाई, जैन रामायण में है आई।
अरे पशु भी बन गया देव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।1।।

नगर महापुर में इक श्रेष्ठी, धर्म में उनकी बहुत रुची थी।
वे पद्मरुचि चले घूमने,
णमोकार की महिमा निराली है।।2।।

बूढ़ा बैल दिखा इक उनको, मरणासन्न देखकर उसको।
अरे मंत्र सुनाया कान में,
णमोकार की महिमा निराली है।।3।।

बैल ने मंत्र सुना शान्ती से, निकले प्राण तभी उस तन से।
उसी नगरी में बना युवराज वह,
णमोकार की महिमा निराली है।।4।।

राजा छत्रच्छाय की रानी, उनके पुत्र की सुनो कहानी।
हुए वृषभध्वज युवराज वे,
णमोकार की महिमा निराली है।।5।।

एक बार युवराज नगर में, घूम रहे थे उसी जगह पे।
हुआ पूर्वजनम का ज्ञान रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।6।।

जान लिया मैं बैल था पहले, वहाँ बहुत दुःख पाये मैंने।
महामंत्र सुना था अंत में,
णमोकार की महिमा निराली है।।7।।

सोचा उसने कैसे खोजूँ, बदला उपकारी का चुका दूँ।
मिला जिससे नरभव आज रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।8।।

उसने वहीं मंदिर बनवाया, सोच के उसमें चित्र बनाया।
उस चित्र में बैल व सेठ थे,
णमोकार की महिमा निराली है।।9।।

कोतवाल इक वहाँ बिठाया, उसको चित्र का सार बताया।
कोई ध्यान से देखे तो बुलवाना,
णमोकार की महिमा निराली है।।10।।

इक दिन पद्मरुची वहाँ आये, चित्र देख मन में हरषाये।
इसे किसने बनाया बोल पड़े,
णमोकार की महिमा निराली है।।11।।

बैल को मंत्र सुनाया था मैंने, किन्तु हमें देखा न किसी ने।
फिर कैसे बना यह चित्र है,
णमोकार की महिमा निराली है।।12।।

कोतवाल सब देख रहा है, सेठ के भाव को समझ रहा है।
गया बतलाने फिर महल में,
णमोकार की महिमा निराली है।।13।।

राजकुमार तुरत ही आये, उपकारी से मिल हरषाये।
उनके पद किया प्रणाम रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।14।।

बैल का जीव ही मैं हूँ भाई, आपने ही नरगति दिलवाई।
उपकार करूँ क्या आपका,
णमोकार की महिमा निराली है।।15।।

दोनों मित्र बने आपस में, श्रावक व्रत धारण किया मन में।
तब बैल बना सुग्रीव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।16।।

पद्मरुची फिर राम बन गये, मित्र से उनके काम बन गये।
फिर मुक्त हुए संसार से,
णमोकार की महिमा निराली है।।17।।

कहे 'चन्दनामति' तुम सबसे, कथा पढ़ो यह रामायण से।
भव दुख से हो उद्धार रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।18।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।।
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।1।।
श्रावस्ती में संभव कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।2।।
पुष्पदन्त काकन्दी शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।3।।
कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमि वंदन कर लो।। चलो.।।4।।
राजगृही में मुनिसुव्रत नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।5।।
गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से ही ''चन्दनामती'' सिद्धि वर लो।। चलो.।।6।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

सार्थक हो जीवन मेरा, पाया जो वरदान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।। टेक.।।
इस तन में है इक चैतन्य आत्मा,
उसका ही सारा चमत्कार है।
जिस दिन निकल जाय तन से वो आत्मा,
रह जाता पुद्गल का संसार है।।
नरजनम को पाके, आत्मतत्त्व ध्याके, पाना परममुक्ति का धाम है।
जड़ चेतन को समझूँ अलग, यही ज्ञानी की पहचान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।1।।
चारों गती में मानुषगती ही,
कहलाती सबसे उत्तम यहाँ।
क्योंकि उसी के द्वारा सभी जन,
करते हैं आतमचिंतन यहाँ।।
सिद्ध जो बने हैं, सिद्ध जो बनेंगे, नरतन से ही पाते निजधाम हैं।
विषयों में फंसना नहीं, देते गुरू ज्ञान हैं।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।2।।
जिनवर की पूजा, गुरुओं की भक्ती,
स्वाध्याय करके संयम धरूँ।
शक्ती के अनुसार करके तपस्या,
दानी बनूँ कुछ नियम भी करूँ।
चन्दनामती ये, कर्म षट् कहे हैं, हो इनसे आतम का कल्याण है।
क्रम क्रम से पाना है फिर, संयम सकल धाम है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –हम लाए हैं तूफान से .....

दुनिया में जैनधर्म सदा से ही रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।टेक.।।

जब से है धरा आसमाँ सौन्दर्य प्रकृति का।
तक से ही प्राणियों में है विश्वास धर्म का।।
हर जीव के सुख का यही आधार रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।1।।

जो कर्म शत्रुओं को जीत ले जिनेन्द्र है।
जिनवर के उपासक ही असलियत में जैन हैं।।
यह धर्म जाति भेद से भी दूर रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।2।।

चांडाल सिंह सर्प भी धारण इसे करें।
मिश्री की भाँति मिष्ट फल को प्राप्त वे करें।।
यह सार्वभौम विश्व धर्मरूप रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।3।।

इस प्राकृतिक उद्यान को सींचा है सभी ने।
इससे ही अहिंसा धरम सीखा है सभी ने।।
यह आदि अंत से रहित अनादि कहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।4।।

इसका कभी न अंत होगा सदा रहेगा।
कलियुग के कालचक्र का संकट भी सहेगा।।
यह धर्म ''चंदनामती'' जिन सूर्य कहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।